# विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2557, ज्येष्ठ पूर्णिमा, 23 जून, 2013 वर्ष 42 अंक 13

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx


**धम्मवाणी**

**इध नन्दति पेच्च नन्दति, कतपुञ्ञो उभयत्थ नन्दति।**
**"पुञ्ञं मे कत"न्ति नन्दति, भिय्यो नन्दति सुग्गतिं गतो॥**

*धम्मपद- १८, यमकवग्गो.*

यहां (इस लोक में) आनंदित होता है, प्राण छोड़ कर (परलोक में) आनंदित होता है। पुण्यकारी दोनों जगह आनंदित होता है। 'मैंने पुण्य किया है' - इस (चिंतन) से आनंदित होता है (और) सुगति को प्राप्त होने पर और भी (अधिक) आनंदित होता है।

## सयाजी ऊ बा खिन की कीर्तिकाया

प्रिय साधक-साधिकाओ!

आओ, पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन के प्रति एक बार फिर कृतज्ञताविभोर होकर अपनी श्रद्धा प्रकट करें और उनके अधूरे सपनों को साकार करने के लिए हम सब संकल्पबद्ध हों कि उस युग पुरुष बोधिसत्व की कीर्तिकाया को चिरस्थाई बनायेंगे। केवल आज की ही नहीं, बल्कि सदियों तक की भावी पीढ़ियों के विपश्यी परिवार उनके उपकार को नहीं भुलायेंगे। जब तक धरती पर शाक्यमुनि भगवान गौतम बुद्ध की पावन स्मृति जीवित रहेगी, तब तक इस बुद्ध-पुत्र के असीम उपकार की यशस्वी याद भी बनी रहेगी।

कृतज्ञता **शाक्यमुनि भगवान गौतम बुद्ध** के प्रति भी जिन्होंने दसों पारमिताओं को पूरा करने के लिए कल्पों तक नाना प्रकार के कष्ट उठाये और अंततः विजयी होकर विपश्यना विद्या खोज निकाली और उसे मुक्त हस्त से बांटा तभी तो हमें प्राप्त हुई।

उपकार तो **ब्रह्मदेश म्यंमा** का भी नहीं भूलेंगे, जिसने सन्तों की गुरु-शिष्य परंपरा द्वारा मूल बुद्धवाणी को ही नहीं, बल्कि तथागत द्वारा मानवजाति को दी गयी उनकी सबसे महान भेंट कल्याणी विपश्यना को भी शुद्ध रूप में सुरक्षित रखा।

असीम उपकार उन **श्रद्धेय भिक्षु प्रवर लैडी सयाडो** का भी, जिन्होंने सदियों से भिक्षुओं द्वारा सुरक्षित रखी गयी विपश्यना विद्या को गृहस्थों के लिए न केवल सुलभ बना दिया बल्कि एक गृहस्थ आचार्य को प्रशिक्षित भी कर दिया।

असीम उपकार उन प्रथम गृहस्थ **आचार्य सयातैजी** का भी, जिन्होंने इस विशिष्ट उत्तरदायित्व को अत्यंत विलक्षणरूप से निभाया, जिससे कि लोग इस तथ्य के प्रति आश्वस्त हुए कि एक गृहस्थ भी मैत्रीसंपन्न कुशल विपश्यनाचार्य की सफल भूमिका अदा कर सकता है।

और फिर उनके प्रमुख शिष्य **सयाजी ऊ बा खिन** के उपकार का तो कहना ही क्या! जिनके अदम्य उत्साह और अपूर्व धर्मसंवेग के फलस्वरूप यह मुक्तिदायिनी विद्या हम सब को मिली। सदियों पूर्व से विलुप्त हुई जिस विपश्यना विद्या को **योगिनांचक्रवर्ती** शाक्यमुनि **सिद्धार्थ गौतम** ने केवल अपने ही नहीं, बल्कि अनेकों के कल्याण के लिए खोज निकाली थी, वह विद्या कुछ ही सदियों बाद अपनी जन्मभूमि भारत में ही नहीं, बल्कि स्वर्णभूमि म्यंमा को छोड़ कर सर्वत्र पुनः लुप्त हो गयी। कितना अटूट विश्वास था सयाजी के मन में इस पुरातन मान्यता का कि यह विद्या अब फिर जागेगी और अपने देश वापस लौटेगी। वे बार-बार कहते थे कि कल्याणी विपश्यना के पुनर्जागरण का डंका बज चुका है और अब अपनी जन्मभूमि भारत में इसका शीघ्र ही पुनरागमन होगा। भारत में इस समय अनेक पुण्यपारमी संपन्न लोग जन्मे हैं जो इसे सहर्ष स्वीकार करेंगे और तदनंतर यह सकल विश्व में छाये अविद्या के अंधकार को चीरती हुई प्रभासमान होगी तथा अमित लोक कल्याण करेगी।

वे कहा करते थे कि सदियों पूर्व म्यंमा इस विद्या को प्राप्त कर भारत का ऋणी हुआ था। उसे अब यह ऋण चुकाना है, भारत को विपश्यना विद्या पुनः लौटानी है। वे यहां पधार कर यह पुनीत कार्य स्वयं किया चाहते थे, परंतु कर नहीं पाए। यहां आ नहीं पाए। भले सशरीर नहीं आ पाए, परंतु अपने धर्मपुत्र के साथ दिव्य शरीर में यहां अवश्य आए और अपना धर्म-संकल्प पूरा करवाने में सहायक हुए।

विपश्यी साधक/साधिकाओं के मन में यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि उन्हें यह अनमोल विद्या किसी गोयन्का से मिली है। गोयन्का तो केवल माध्यम मात्र है। वस्तुतः उन्हें विपश्यना तो सयाजी ऊ बा खिन से मिली है। भारत आकर जुलाई १९६९ में जब पहला शिविर दिया, तब से लेकर अब तक प्रत्येक शिविर लगाते हुए वह इसी तथ्य की घोषणा करता रहा है और भविष्य में भी करता ही रहेगा। आनापान देते हुए शिविर में सदैव उसकी यह धर्मवाणी गूंजती है – **"गुरुवर! तेरी ओर से, देऊं धरम का दान।...**

और इसी प्रकार विपश्यना देते हुए भी –

**"गुरुवर! तेरा प्रतिनिधि, देऊं धरम का दान।...**

और मैत्री के पश्चात शिविर समापन करके अपने निवास कक्ष में लौट कर भी –

**"गुरुवर! तेरो पुन्य है, तेरो ही परताप।**
**लोगां नै बांट्यो धरम, दूर करण भवताप॥"**

अन्य सहायक भी यही टेप चला कर शिविर लगाते हैं और भविष्य में इस पीढ़ी के ही नहीं, भावी पीढ़ियों के भी सभी आचार्य

यही टेप चला कर शिविर लगायेंगे। अतः स्पष्ट है कि शुद्ध विपश्यना के पुनः भारत लौटने और भारत से सारे विश्व में फैलने का वास्तविक श्रेय परम पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन को ही है। उनके उपकार को कोई भी विपश्यी साधक कैसे विस्मृत कर सकता है भला!

यह एक ज्वलंत ऐतिहासिक तथ्य है कि यदि म्यंमा (बर्मा) नहीं होता तो विपश्यना कायम नहीं रहती। यदि विपश्यना कायम नहीं रहती तो लैडी सयाडो नहीं होते। यदि लैडी सयाडो नहीं होते तो सयातैजी नहीं होते। यदि सयातैजी नहीं होते तो सयाजी ऊ बा खिन नहीं होते और यदि सयाजी ऊ बा खिन नहीं होते तो गोयन्का कहां से होता? गोयन्का तो सयाजी का ही मानस पुत्र है। सयाजी ऊ बा खिन के करुण मानस में भारत का पुरातन ऋण चुकाने का प्रबल धर्मसंवेग न जागता और भारत तथा विश्व भर में विपश्यना के फैलाव की धर्माकांक्षा न जागती तो जो कुछ हुआ है, वह कैसे संभव होता? द्वितीय धर्मशासन के जागरण और प्रसारण में इस महान गृही संत का बहुत बड़ा हाथ रहा है। हम उसके ऋण से कैसे उऋण हो सकते हैं। सचमुच –

**रोम रोम कृतज्ञ हुआ, ऋण न चुकाया जाय।**

ऋणमुक्त होने का सर्वप्रथम महत्त्वपूर्ण उपाय तो यही है कि –
**जीयें जीवन धर्म का!**

धर्मचक्र-प्रवर्तन के पावन अवसर पर सभी विपश्यी साधक यह दृढ़ निश्चय करें कि हम यथाशक्ति धर्म का जीवन जीयेंगे। हम सब सयाजी ऊ बा खिन के शिष्य, उनका गौरव अक्षुण्ण रखेंगे। धर्मपथ पर दृढ़तापूर्वक चलते हुए हम अपना तो कल्याण साधेंगे ही, औरों के कल्याण में सहायक बन जायेंगे। हमारी धर्ममयी जीवनचर्या को देख कर जिनमें विपश्यना के प्रति श्रद्धा नहीं है, उनमें श्रद्धा जागेगी, जिनमें श्रद्धा है, उनकी श्रद्धा बढ़ेगी। इस प्रकार विपश्यना के प्रसार द्वारा अनगिनत लोगों के कल्याण का पथ प्रशस्त होगा।

पूज्य गुरुदेव सयाजी **ऊ बा खिन की असीम मंगल मैत्री** के बल पर ही यहां विपश्यना के पांव दृढ़तापूर्वक जमे हैं। भारत के हर वर्ग के, हर संप्रदाय के लोगों ने इसे सहर्ष अपनाया है। विश्व भर के छहों महाद्वीपों के छोटे-बड़े शताधिक देशों के लोगों ने इसे बिना झिझक स्वीकार किया है और लाभान्वित हुए हैं।

इतने कम समय में जो कुछ हुआ है उसका अवमूल्यन नहीं करना चाहते, परंतु जो कुछ बाकी है वह तो निस्संदेह बहुत अधिक है। जो कुछ संपन्न हुआ, उसे आधार मान कर विश्वव्यापी विपश्यना के बहुमुखी विकास के लिए हम सभी सन्नद्ध हों। इस अवसर पर हम निम्नांकित योजनाओं को पूरा करने में दृढ़तापूर्वक जुट जायँ, जिससे सयाजी ऊ बा खिन की धर्मकामना पूरी करती हुई कल्याणी विपश्यना विद्या भविष्य में प्रभूत प्रभावशाली ढंग से प्रवेश करे।

⏩ अब तक भारत तथा विश्व भर में विपश्यना के जितने केंद्र स्थापित हो चुके हैं और जिनमें प्रशिक्षण चल रहा है उनका विकास हो और जो निर्माणाधीन हैं उनका निर्माण शीघ्र से शीघ्र पूरा हो, ताकि अधिक से अधिक लोग उनसे लाभान्वित होते रहें।

⏩ धम्मगिरि के प्रमुख विपश्यना केंद्र में प्रति शिविर ६०० से अधिक दस दिवसीय साधकों को प्रवेश दिया जा रहा है फिर भी अनेकों को महीनों तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है। स्थानाभाव के कारण अब यहां दस दिवसीय के साथ-साथ २०, ३०, ४५ और ६० दिनों के शिविर लग सकने कठिन हो गये थे। अतः निर्णय किया गया कि धम्मगिरि पर केवल दस दिवसीय शिविर ही लगें। लंबे शिविरों के लिए धम्मगिरि के सन्निकट **धम्म तपोवन नं. १** एवं **धम्म तपोवन नं. २** – दो नए केंद्रों की स्थापना की गयी, इन्हें पूरा करें ताकि दीर्घकालीन एकाकी, एकांत तपस्या में लीन होने वाले अधिकाधिक तपस्वियों और तपस्विनियों को पूर्ण सुविधासम्पन्न एक-एक निवास और एक-एक शून्यागार उपलब्ध हो, ताकि गंभीर साधक इन नए केंद्रों में गहराइयों तक डुबकी लगा कर इस विद्या का अत्यधिक लाभ उठा सकें।

⏩ विश्व के अधिक से अधिक लोगों को विपश्यना विद्या का लाभ मिले, इसलिए केवल स्थाई विपश्यना केंद्रों में ही नहीं, बल्कि अनेक देशों में अकेंद्रीय स्थानों पर भी अस्थाई शिविर लगते रहते हैं। ऐसे अकेंद्रीय शिविर अधिक से अधिक स्थानों पर लगें, ताकि अधिकाधिक लोग विपश्यना से लाभान्वित हो सकें।

⏩ भारत, म्यंमा, नेपाल, ताईवान, इंगलैंड और अमेरिका के कारागृहों में लगे विपश्यना शिविरों ने बंदी अपराधियों में सुधार की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह शिक्षणक्रम इन देशों में तो आगे बढ़े ही, अन्यान्य देशों में भी शीघ्र आरंभ किया जाय।

⏩ भारत और नेपाल में नेत्रविहीन लोगों के लिए अत्यंत फलदायी विपश्यना शिविर लगे हैं। इनका इन्हीं देशों में ही नहीं, बल्कि अन्य देशों में भी फैलाव हो।

⏩ भारत में कुष्ठ रोगियों के लिए विपश्यना के शिविर लगे, जिनसे उनकी मानसिकता में बहुत सुधार हुआ है। उनकी हीनभावना की ग्रंथियां टूटी हैं। विपश्यना के कारण जीवन में मुस्कान आयी है। इस क्षेत्र का सफल प्रयोग आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

⏩ जुए, तंबाकू और मादक पदार्थों के अनेक व्यसनी विपश्यना के अभ्यास द्वारा व्यसन-मुक्त हुए हैं। ड्रग के व्यसन में बुरी तरह जकड़े हुए लोगों का भी व्यसन-विमोचन हुआ है। आस्ट्रेलिया और स्विटजरलैंड में सरकारी सहयोग के साथ इस दिशा में विपश्यना द्वारा बहुत काम हुआ है और हो रहा है। इस लोकोपकारी कार्य को सर्वत्र बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

⏩ भारत तथा अन्य अनेक देशों में प्राइमरी से लेकर हाईस्कूल तक के हजारों छात्र-छात्राएं आनापान से और कॉलेज के विद्यार्थी विपश्यना से लाभान्वित हो रहे हैं। यह कार्यक्रम बहु-गुणित रूप में आगे बढ़ना चाहिए ताकि मानव जाति की भावी पीढ़ी सुख-शांति, स्नेह-सौहार्द तथा सद्भावना का जीवन जी सके।

⏩ **मित्र उपक्रमः** इसी क्रम में महाराष्ट्र शासन ने **मित्र उपक्रम** नाम से एक कार्ययोजना तैयार की है जिसके माध्यम से पूरे महाराष्ट्र के सभी सरकारी स्कूलों में विपश्यना और बच्चों को आनापान सिखाने की प्रक्रिया आरंभ की है। शिविर में सम्मिलित होने के लिए अध्यापकों को सवैतनिक अवकाश दिया जाता है ताकि वे न केवल इस विद्या से स्वयं लाभान्वित हों, बल्कि स्कूलों में बच्चों को आनापान करवा सकने में सफल हो सकें। इस प्रकार

अब तक लाखों की संख्या में लोग लाभान्वित हुए हैं। इसे आगे बढ़ाना चाहिए।

▶▶ भारत में, विशेषकर मुंबई शहर में सड़कों पर जीवन बिताने वाले गरीब आवारा बच्चों पर भी आनापान के प्रशिक्षण का सफल प्रयोग किया। इसे भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

▶▶ पटिपत्ति विपश्यना सद्धर्म का प्रयोगात्मक पक्ष है। इसका परियत्ति यानी सैद्धान्तिक पक्ष उजागर करने के लिए जिस विपश्यना विशोधन विन्यास का गठन किया गया, उसने अपने कार्यक्षेत्र में विशिष्ट सफलता प्राप्त की है। मूल पालि तिपिटक, समस्त अट्ठकथाएं, टीकाएं और अनुटीकाएं तथा अन्य अनेक ग्रंथों सहित बृहद पालि वाङ्मय एक छोटी-सी सघन तस्तरी में निवेशित कर दिया गया है। अन्य दुर्लभ पालि ग्रंथ भी जहां कहीं उपलब्ध थे, उन्हें इसमें जोड़ दिया गया। इन ग्रंथों का पुस्तकाकार प्रकाशन भी संतोषजनक गति से आगे बढ़ना चाहिए।

▶▶ इसी प्रकार संस्कृत भाषा के संपूर्ण धार्मिक वाङ्मय को भी निवेशित करने का सराहनीय काम आरंभ कर दिया गया है। उसे शीघ्र पूरा किया जाना आवश्यक है। इससे शोधकार्य गंभीरतापूर्वक संपन्न हो सकेगा और इससे यह जाना जा सकेगा कि वे कौन-से कारण थे, जिनकी वजह से कल्याणी विपश्यना और तत्संबंधी साहित्य इस देश से विलुप्त हुए। ऐसे खतरों के प्रति सजग रहते हुए भारत में पुनः आयी हुई विपश्यना और उसके साहित्य को चिरकाल तक सुरक्षित रखना है। इसी से गुरुदेव की यह मंगल कामना पूर्ण होगी – **"चिरं तिट्ठतु सद्धम्मो"**। यह कार्य किसी भी अन्य संप्रदाय के प्रति द्वेषभाव जगा कर कदापि न किया जाय। केवल यथाभूत सत्य का अन्वेषण हो। क्योंकि गुरुदेव **सयाजी ऊ बा खिन** सदा **'सत्यमेव जयते'** की धर्मनीति के ही पक्षधर थे। उनकी कुर्सी के पीछे यही बोल बरमी भाषा में लिखे रहते थे। ... *(क्रमशः -- अगले अंक में)*

साधको, धर्म को चिरस्थाई बनाने के लिए आओ, उपरोक्त सभी योजनाओं को सफल करके उनकी इस धर्मकामना को पूरी करते हुए हम अपना भी कल्याण साधें तथा जन-जन के कल्याण में भी सहायक बन जायँ।

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

---

## बुद्धपूर्णिमा पर पूज्य गुरुदेव की मंगल मैत्री

गत २५ मई को पूज्य गुरुदेव की उपस्थिति में **ग्लोबल विपश्यना पगोडा** का बृहत्शिविर सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। तीन बजे से इसके खुले प्रवचन में लगभग ४-५ हजार लोग सम्मिलित हुए और पूज्य गुरुदेव की मंगलमैत्री से अत्यंत प्रसन्न हुए।

---

## धम्म मधुरा, मदुराई के दूसरे चरण का निर्माण

तमिलनाडु के दूसरे विपश्यना केंद्र धम्म मधुरा के दूसरे चरण का काम आरंभ हो चुका है। यहां शिविर भी लगने लगे हैं। जो भी साधक इसके विस्तार के पुण्यार्जन में भागीदार होना चाहें वे संपर्क कर सकते हैं-- **विपश्यना मेडीटेशन सेंटर**, मदुराई, खाता क्र. 31262542660, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, अनाईयूर शाखा- IFS code no. SBIN0012764, Swift code: SBININBB454, संपर्क नं. 9443728116 या 9442603490. ईमेल-- dhammamadhura@gmail.com

# महत्त्वपूर्ण सूचना

मेरे धर्मपुत्रो एवं धर्मपुत्रियो!

तुम्हारा मंगल हो!

समस्त विश्व में हो रहे धर्मकार्य के समाचार जान कर मेरा मन अत्यंत प्रसन्नता से भर उठता है।

परंतु ९० वर्ष की अवस्था में शारीरिक दुर्बलताएं अपना रंग दिखाने लगती हैं। और दूसरी ओर जब काम भी पहले से बहुत अधिक बढ़ गया हो तो यह उचित ही समझा कि योग्य पात्रों पर थोड़ा काम का बोझ डाल दूं ताकि मैं अपना समय अत्यंत आवश्यक काम निपटाने में ही लगाऊं।

इसलिए मैंने निम्न कार्यों के लिए : यथा --

● आचार्यों की ओर से सहायक आचार्य नियुक्त करना अथवा किसी सहायक आचार्य की पद-बढ़ोत्तरी आदि,

● नये केंद्रों की स्थापना की स्वीकृति देना, ● पत्राचारादि,

के लिए निम्न पात्र चुने हैं, जो समय-समय पर यथोचित निर्णय लेंगे और आवश्यक होने पर मुझसे परामर्श करेंगे। ये लोग सभी आवश्यक पहलुओं की मुझे जानकारी भी देते रहेंगे।

१. श्री बैरी एवं केट लैपिंग पूर्वी व मध्य अमेरिका का काम देखेंगे।

२. श्री थॉमस एवं टीना क्रिसमैन शेष USA का।

३. श्री बिल हार्ट कनाडा और इजरायल का।

४. श्री ऑर्थर निकल्स लातीनी (Latin) अमेरिका का।

५. कु. फ्लोह लेहमन, यूरोप, अफ्रीका।

६. कु. लारेन डोनेमन, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड का।

७. श्री विमलचंद सुराना, एशिया एवं मध्य पूर्व के देशों का (इजरायल छोड़ कर)। (भारत में श्री महासुख खंधार उनकी सहायता करेंगे। अन्य देशों में संबंधित सहायता के लिए आचार्यों का चयन श्री सुराना स्वयं करेंगे।)

-- सारे धर्म-कार्यों की रिपोर्ट, नियुक्तियां इत्यादि की सूचनाएं पूर्ववत धम्मगिरि आती रहेंगी और स्वीकृतियां **'विपश्यना'** पत्रिका एवं **'विपस्सना न्यूजलेटर'** में छपती रहेंगी।

अपने स्वास्थ्य और समय के अनुसार मैं अपना कार्य पूर्ववत करता रहूंगा।

धर्म खूब फैले और लोकमंगल करे!

कल्याण मित्र,
सत्यनारायण गोयन्का.

---


**विपश्यना पत्र के स्वामित्व आदि का विवरण**

समाचार पत्र का नाम : **"विपश्यना"**
भाषा : **हिंदी**
प्रकाशन का नियत काल : **मासिक** (प्रत्येक पूर्णिमा)
प्रकाशन का स्थान : विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३.
मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक का नाम : राम प्रताप यादव
राष्ट्रीयता : भारतीय
मुद्रण का स्थान : अक्षरचित्र, बी-६९, सातपुर, नाशिक-७.
पत्रिका के मालिक का नाम : **विपश्यना विशोधन विन्यास,**
(रजि. मुख्य कार्यालय):
ग्रीन हाऊस, २ रा माला,
ग्रीन स्ट्रीट, फोर्ट, मुंबई-४०००२३.

मैं, राम प्रताप यादव एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि ऊपर दिया गया विवरण मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य है।

**राम प्रताप यादव,**
मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक
दि. १२-६-२०१३.

**Registered No. NSK/235/2012-2014**

**WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014**

## महाराष्ट्र के सात आश्चर्य (अजूबे)

मराठी समाचार चैनेल **'एबीपी माझा'** (**ABP Majha**) और **'महाराष्ट्र पर्यटन विकास निगम'** (Maharashtra Tourism Development Corporation (MTDC) के द्वारा कराये गये एक सर्वेक्षण में महाराष्ट्र के ३५० पर्यटन स्थलों को देखा-परखा गया और उनकी चयनित **सात अजूबों** की सूची में **'विश्व विपश्यना पगोडा'** को सम्मिलित किया गया है। *(यह समाचार इस टीवी चैनेल द्वारा ६ जून, २०१३ को विश्वभर में प्रसारित किया गया।)*

### अतिरिक्त उत्तरदायित्व

### आचार्य

1. Ms. Floh Lehmann, Germany, To serve as Co-Ordinator Area Teacher for Entire Europe
(पूरे यूरोप के लिए संयोजक क्षेत्रीय आचार्या की सेवा)

### वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्रीमती शारदा जैन, धम्मपफुल्ल में केंद्र आचार्य की सहायता की सेवा

### नये उत्तरदायित्व

### वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री अशोक बाभले, धम्मविपुल में केंद्र-आचार्य की सहायता-सेवा

### नव नियुक्तियां

### सहायक आचार्य

१. श्री कुमार पांडियन, जयपुर
२. श्रीमती निर्मला पटेल, औरंगाबाद
3. Mr. Gilles Goulet, Canada
4. Mrs. Kusuma Rathnasekava, Sri Lanka **5.** Mrs. Chandra Hulanganuwa, Sri Lanka
6. Ms. Suzanne Bridgewater, UK
7. Mr. Davide Reale, Italy
8. Ms. Vipa Pintusophon, Hong Kong

### बालशिविर शिक्षक

१. श्री हरिदास रंगारी, नाशिक
2. Mrs Eva Dysonko / Mei Wa Eva, Hong Kong
3. Mr Erwin Kosasih, Singapore
4. Mr Urosin Candrian, Switzerland
5. Ms. Kyung Ju Ha, Switzerland

### धम्मचक्क पवत्तन दिवस के अवसर पर पूज्य गुरुदेव एवं माताजी के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर

**21 जुलाई,** 2013, **रविवार**, **समयः** प्रातः **11** बजे से अपराह्न **4** बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** में। **3 बजे पूज्य गुरुजी के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। शिविर के लिए बड़ी संख्या में धर्मसेवकों की भी आवश्यकता है। कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें।** कृपया **बिना बुकिंग कराये न आएं। बुकिंग संपर्क : फोन नं.: 022-28451170 / 022-33747501- Extn. 9, 022-33747543 / 33747544, (फोन बुकिंग :** प्रातः **11** से सायं **5** तक, प्रतिदिन) **ईमेल Regn: oneday@globalpagoda.org**
**Online Registration: www.oneday.globalpagoda.org**

### विपश्यना समुपदेशन एवं विशोधन केंद्र

बृहन्मुबई महानगर पालिका एवं विपश्यना विशोधन विन्यास के सहयोग से 'सिद्धार्थ महानगरपालिका अस्पताल' के मानसिक चिकित्सा विभाग के समकक्ष यहां **'विपश्यना समुपदेशन एवं विशोधन केंद्र'** की स्थापना की गयी है।
**पता--** शास्त्रीनगर, गोरेगांव (प.) मुंबई-४००१०४. फोन- २८७६६८८५, २८७६६८८६, एक्सटेंशन २१९, (कार्य-दिवसों पर सुबह १० से दोपहर १ बजे तक)।

यहां निम्न लिखित कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं--

-- **विपश्यी साधकों के लिए-- (१). स्वयं साधना--** (केवल कार्य-दिवसों पर) सुबह ९-३० से ११-३०; **(२). सामूहिक साधना--** प्रत्येक रविवार, सुबह ८-३० से ९-३०;
**(३). एक दिवसीय शिविर--** महीने के **प्रथम** रविवार, सुबह १०-३० से सायं ५-३०;
-- **आनापान शिविर** (सब के लिए) महीने के **दूसरे** रविवार, सुबह ९-३० से १०-३०;
-- **बच्चों के एक-दिवसीय शिविर--** महीने के **तीसरे** रवि., सुबह ८-३० से दोप. २-३०;
-- **धम्मसेवकों की सभा --** महीने के **चौथे** रविवार, सुबह ९-३० से १०-३०


### दोहे धर्म के

आज नमन का दिवस है, अंतर भरी उमंग।
श्रद्धा और कृतज्ञता, विमल भक्ति का रंग॥
ग्रहण करूं गुरुदेवजी, ऐसी शुभ आशीष।
धर्म बोधि हिय में धरूं, चरण नवाऊं शीश॥
सत्कृत से ही पूज्य है, दुष्कृत निंदित होय।
दुष्कृत से ही नीच है, सत्कृत ऊंचा होय॥
बिन स्व-कर्म सुधरे भला, भला कहां से होय?
बिन स्व-चित्त सुधरे भला, मुक्ति कहां से होय?
मिली मुक्ति की साधना, करें स्वयं पुरुषार्थ।
काटें बंधन कर्म के, जीवन होय कृतार्थ॥

**केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड**
८, मोहता भुवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

### दूहा धरम रा

धरम पंथ री जातरा, लोग मिल्या अणजाण।
कितनां कितनां जनम री, जागी धरम पिछाण॥
साथी संगी पंथ पर, किसो दियो सहकार।
चित छायी किरतग्यता, छायो चित आभार॥
गुरुवर तेरी ही क्रिपा, कटै जगत रा क्लेस।
आयी गंगा धरम री, ईं मरुधर रै देस॥
पुन्य उदय होयो इसो, संत मिल्यो अणमोल।
भवदुख प्यासै जीव नै, इमरत दीन्यो घोळ॥
या गुरुवर री बंदगी, या हि धरम मरयाद।
जीवन जीऊं धरम रो, होवै ना अपराध॥
धरम मिल्यो निरमळ हुयो, जीवन तन मन प्राण।
चित छायी किरतग्यता, चित छायो अहसान॥

**एक साधक**
की मंगल कामनाओं सहित


'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2556, ज्येष्ठ पूर्णिमा, 23 जून, 2013**

**वार्षिक शुल्क** रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

**विपश्यना विशोधन विन्यास**
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
**फोन :** (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org